मदन मोहन मालवीय

जीवन परिचय :-

मालवीय जी का जन्म प्रयाग में जिसे स्वतंत्र भारत में इलाहाबाद कहा जाता है, 25 Dec. 1861 को पंडित ब्रजनाथ व मूनादेवी के यहां हुआ था। वे अपने माता-पिता से उत्पन्न कुल सात भाई-बहनों में पाँचवें पुत्र थे। उनके पूर्वज मालवीय कहलाते थे। उनके पिता ब्रजनाथजी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे श्रीमद्भागवत् की कथा सुनाकर अपनी आजीविका अर्जित करते थे और उनकी माता को दुखियों की सेवा करने का स्वभाव प्राप्त हुआ था। महामना मदन मालवीय काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही साथ ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अंतिम व्यक्ति थे जिन्हें 'महामना' की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। महामना मालवीयजी की संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। मालवीयजी अपने कर्म, वेशभूषा, आचार-विचार से भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृभाषा तथा मातृमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करनेवाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिए तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा करे। मालवीयजी का कहना था "सिर जाय तो जाय प्रभु, मेरो धर्म न जाय" ये उनके जीवन का व्रत था जिसमें उनका व्यक्तित्व और सार्वजनिक जीवन समाज से प्रभावित था।

मालवीयजी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे बल्कि स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार सदैव मृदुभाषी रहे।

प्रारम्भिक शिक्षा

मालवीयजी 5 वर्ष की आयु में उन्हें उनके माँ-बाप ने संस्कृत भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा लेने हेतु पण्डित हरदेव धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला में भर्ती करा दिया जहाँ से उन्होंने प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके पश्चात वे एक अन्य विद्यालय में भेज दिये गए जिसे प्रयाग की विद्यावर्धिनी सभा संचालित करती थी। यहाँ से शिक्षा पूर्ण कर वे इलाहाबाद के जिला स्कूल पढ़ने गये। यहीं उन्होंने मकरंद के उपनाम से कवितायें लिखनी प्रारम्भ की जो दुनिया में बहुत विख्यात हुई। 1879 में उन्होंने म्योर सेन्ट्रल कॉलेज से 10 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। हैरिसन स्कूल के प्रिंसपल ने उन्हें छात्रवृत्ति देकर कलकत्ता विश्वविद्यालय भेजा जहाँ से उन्होंने 1884 में B.A की उपाधि प्राप्त की और वर्ष 1884 में उन्होंने विश्व विद्यालय में 40 रू मासिक वेतन पर इलाहाबाद जिले में शिक्षक बन गए। इसी बीच अखाड़े में व्यायाम और सितार पर शास्त्रीय संगीत की शिक्षा भी जारी रखा।

ढाई वर्ष तक संपादक के पद की जिम्मेदारी संभालने के बाद वह एल.एल.बी की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद वापस चले गये सन 1891 में उन्होंने अपनी L.L.B की पढ़ाई पूरी की और सन 1893

में प्रगति करते हुए वह इलाहाबाद उच्च न्यायालय में प्रेक्टिस करने लगे। वर्ष 1907 में मदन मोहन ने 'अभ्युदय' नामक हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किया और 1915 में इसे दैनिक समाचार पत्र में तब्दील कर दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में महामना का सबसे बड़ा योगदान काशी हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में दुनिया के सामने आया था। मालवीय जी देश से निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के व्यापक प्रसार को देश की उन्नति के लिए आधारशिला मानते थे, अतः उन्होंने शिक्षा पर अधिक बल दिया। वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। शिक्षा संबंधी अपनी धारणा को साकार करने के लिए उन्होंने एक महान विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना बनाई और अपनी ईमानदारी, लगन व परिश्रम के कारण उन्हें इस कार्य में सफलता मिली। सन 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय आज भी भारत के विश्वविद्यालयों में प्रमुख है। जितने विषयों के अध्ययन की यहाँ व्यवस्था है उतनी शायद ही कहीं हो। वे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक थे, उनका मानना था कि बिना हिंदी ज्ञान के देश की उन्नति संभव नहीं है। 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' जैसी साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना द्वारा 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय तथा अन्य शिक्षा केन्द्रों के निर्माण द्वारा और सार्वजनिक रूप से हिन्दी आन्दोलन का नेतृत्व कर उसे सरकारी दफ्तरों में स्वीकृत कराके मालवीय जी ने हिन्दी को यश, विस्तार और उच्च पद दिलाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे उच्च कोटि के विद्वान, वक्ता और लेखक थे।

राजनीति क्षेत्र में योगदान

जीवनकाल के प्रारम्भ से ही मालवीयजी राजनीति में रुचि लेने लगे और वो एक राजनेता और स्वतंत्र सेनानी के रूप में जीवन की शुरूआत की जो निम्नलिखित है:-

i) सन 1886 में मालवीय जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में प्रेरक भाषण देते ही राजनीति के मंच पर छा गए और उन्होंने लगभग 50 साल तक कांग्रेस की सेवा की।

ii) कांग्रेस के चार बार अध्यक्ष रहे जिसमें 1909 (लाहौर में) 1918 (दिल्ली में), 1930 (दिल्ली मे) और 1932 (कलकत्ता मे) अपनी अध्यक्षता सम्भाली।

iii) उन्होंने अत्यंत प्रभावशाली अंग्रेजी समाचार पत्र 'The leader' की 1909 में स्थापना की जो इलाहाबाद से प्रकाशित होता था।

iv) 1930 में जब महात्मा गाँधी नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया तो उन्होंने उसमे हिस्सा लिया और गिरफ्तारी दी।

v) मालवीयजी इलाहाबाद नगरपालिका बोर्ड में सक्रिय रूप से शामिल रहे और वह 1903-1918 के दौरान प्रॉविन्शियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य, 1910-1920 के दौरान सेंट्रल काउंसिल, 1916-1918 के दौरान इंडियन लेजिस्लेटिव असेंबली के निर्वाचित सदस्य रहे।

iii) उन्होंने 1931 में दूसरे राउंड टेबल कान्फ्रेंस में हिस्सा लिया। 1937 में उन्होंने सक्रिय राजनीति को अलविदा कहकर और अपना ध्यान समाजिक मुद्दों पर केन्द्रित कर दिया।

स्त्री शिक्षा

मालवीयजी ने शिक्षा के स्तर पर बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मालवीयजी स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और उनका विचार था कि हमारे देश की स्त्रियां पढ़-लिखकर अपने राष्ट्र का सम्मान करें तथा अपने आंतरिक जीवन का विकास करें। उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन और बाल विवाह का विरोध करने के साथ ही महिलाओं की शिक्षा के लिए काम किया, जिससे कि वो समाज को विकास की ओर अग्रसर कर सकें।

सन् 1946 में 12 Nov. को बनारस में उनकी मृत्यु हो गयी तथा 24 Dec. 2014 को उनकी 153वीं जयंती से एक दिन पहले उनको भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न अलंकृत किया गया।